REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

महिला आत्मकथाओं में सामाजिक संघर्ष

डॉ. अमित कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री राम कॉलेज सारागांव, रायपुर (छ.ग)

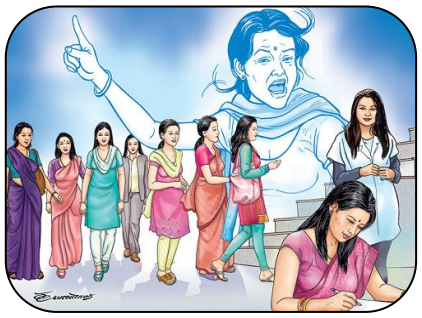

साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। समाज का वास्तविक चित्रण साहित्य में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। साहित्यिक विधाओं में आत्मकथा एक प्रमुख विधा मानी जाती है। आत्मकथा के लेखक अपने कार्य के माध्यम से समय के परिप्रेक्ष्य में अपनी पहचान स्थापित करते हैं। इसमें एक व्यक्ति के माध्यम से उस युग के जीवन के विभिन्न संदर्भों को अभिव्यक्ति मिलती है। साहित्य का अध्ययन करते समय आत्मकथाओं का विश्लेषण विशेष रूप से आकर्षक लगता है। संवेदनशीलता के कारण, सत्य के धरातल पर स्वयं को परखने की प्रेरणा से आत्मकथा के अध्ययन में विशेषकर महिला आत्मकथाओं के प्रति रुचि बढ़ी है। यथार्थ से यथार्थ तक पहुँचने की यह प्रक्रिया मुझे शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

प्रस्तावना :

महिला आत्मकथाओं में सामाजिक संघर्ष की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है । महिलाओं ने सदियों तक आत्मसम्मान और स्वयं के विकास को गौण रखते हुए परिवार और समाज के लिए अपना सबकुछ बलिदान किया है। महिला आत्मकथा में महिलाओं के आत्मसम्मान के पहचान की बात प्रमुख रुप से उठाई गई है। अब तक पितृसत्तात्मक समाज में परिवार का गौरव पुरुष ही होता था और पुरुष ही घर, परिवार और समाज के क्रियाकलापों का संचालन करता था। साठ-सत्तर के दौरान अचानक से हिन्दी साहित्य जगत में उस समय हलचल उत्पन्न हो गई जब एकाएक महिला साहित्यकारों ने अपनी व्यथा दुनिया के सामने प्रस्तुत की। समाज के लोग अचानक सोचने को मजबूर हो गये कि महिलायें भी साहित्य जगत में अपनी पहुँच बनाकर अपनी अभिव्यक्ति दे सकती हैं। महिलाओं का दुःख, संताप समाज की अन्यायकारी, शोषणवादी प्रवृत्ति का परिणाम है। कभी भी साहित्य जगत ने यह सोचा ही नहीं कि उनके समक्ष भीं कोई नारी लेखिका बेहतरीन रचनाओं को जन्म दे सकती है। समय व्यक्ति का पुनरुत्थान करता है। एक समय वैदिक युग के समाज में महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी थी। महिलाओं को समाज में पुरुषों के बराबर का अधिकार था,

किन्तु मध्यकाल के आते-आते महिलायें परिवारनुमा पिंजरे में कैद होकर रह गईं। उनके लिए विकास के सारे रास्ते बंद थे। सती प्रथा, बाल विवाह, अनैतिक कार्य, बहु-विवाह ने महिलाओं का जबरदस्त शोषण किया। वह अपने अस्तित्व को अस्वीकार कर चुकी थी। परम्परा का निर्वाह उनके जीवन का परम कर्तव्य था। इसी बीच सामाजिक सुधारवादी आंदोलन ने समाज की रुढ़िवादी सोच में परिवर्तन किया। महिलाओं को शिक्षा और स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त हुआ। महिलायें पढ़ने लिखने लगी। और समाज में अपनी पहचान बनाने में सक्षम हुई। पढ़ी-लिखी महिलाओं ने रुढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ने के लिए सार्थक कदम उठाएं। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ उन्होनें साहित्य में जमकर आलोचना की। वास्तव में नवयुग में महिलाओं के पर्दापण ने सामाजिक संघर्ष की भावनाओं को जन्म दिया। महिलायें पहले जिसे धर्म, परम्परा समझकर सहती थी अब वह इसे रुढ़िवादिता, अवैज्ञानिक आधार मानकर विरोध करती हैं।

आत्मकथा का अर्थ- साधारण शब्दो में लेखकों, लेखिकाओं अथवा व्यक्तियों की स्वलिखित जीवन-कथा कों आत्मकथा कहते है। किन्तु व्यापक रुप में आत्मकथा रचनाकारों की आत्म-अभिव्यक्ति जीवन, वृत्त कों प्रस्तुत करती हैं जिसमें उनके जीवन के विभिन्न सुख-दुख, अच्छाई-बुराई, तर्क, परम्पराओं आदि का सत्य वर्णन होता है। अर्थात् रचनाकार के जीवन में घटित घटनाओं का यथार्थ चित्रण आत्मकथा में होता है।

'आत्मकथा'शब्द मूलतः अंग्रेजी के 'ऑटोबायोग्राफी'; का हिन्दी रुपान्तरण है। "वृहद् हिन्दी कोश में आत्मकथा शब्द का विग्रह अर्थात् आत्म और कथा कों अलग- अलग लिया गया है। (आत्मन् + कथा) आत्मकथा आत्मन् का समास में व्यवस्थित रुप हैं जिसका अर्थ हैं अपना, निज का, आत्मा का, मन का। कथा का अर्थ हैं कहानी। अतः आत्मकथा का अर्थ हुआ स्वलिखित जीवन कथा।"

हिन्दी आत्मकथा की परिभाषा -

1.डॉ.माजदा असद - "स्वयं लिखी अपनी जीवनी आत्मकथा कहलाती है। जब कोई व्यक्ति कलात्मक, साहित्यिक ढंग से अपनी जीवनी स्वयं लिखता हैं तब उसे आत्मकथा कहते है।"

2. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका - "आत्मकथा व्यक्ति के जिये हुए जीवन का ब्यौरा हैं जो कि स्वयं उसके द्वारा लिखा जाता है। जिसका मूल सिद्धांत आत्म विष्लेशण होना चाहिए।"

3. डॉ. कमलेश सिंह - "आत्मकथा साहित्य का वह प्रकार है, जिसमें लेखक अपने जिए हुए जीवन का मुख्य घटनाओं का विवरण सत्य एवं यथार्थ की भूमिका पर आत्मनिरीक्षण एवं परीक्षण करते हुए प्रस्तुत करता है।"

अध्ययन का महत्व एवम आश्यकता

भारतीय समाज एवं संस्कृति दुनिया में मानवतावादी होने का शंखनाद किया जाता है लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारे समाज और संस्कृति ने दुनिया के आधी आबादी अर्थात महिलाओं को कभी मानवीयता और समानता का अधिकार नहीं दिया। महिलाएं हर तरह से हाशिये पर है शोषण है देह तक रिड्यूस कर दी गई, वस्तुकरण भी बहुत भयानक हुआ । महिला की इस त्रासदी को केवल महिला ही लिख सकती है । आत्मकथा महिलाओं की खुद की आवाज थी महिलाओं ने अपने जीवन के कटु अनुभव संघर्ष सुख दुख और दुनिया भर का उनका अपना विश्लेषण उन्होंने अपने आत्मकथाओं के माध्यम से कहा । उनकी इस स्थिति के लिए उनका स्त्री के रूप में जन्म जिम्मेदार नहीं है बल्कि इस समाज की ढांचा का असमानताएं जिम्मेदार हैं और लेखन के माध्यम से स्त्रियों द्वारा इस ढांचा का स्थिति को सामने लाने की कोशिश की गई । यह कोशिश बुद्धकाल की थ्योरी में मीरा, आडाल, महादेव से लेकर आज के लेखिकाएं भी कर रही है । स्त्रियों की इन्हीं लेखन परंपरा से हम जान पाए कि उनके लेखन का योगदान हमारे लिए रहे हैं | हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मकथाओं के माध्यम से सदियों से दवाई गई, कुचली गयी के स्त्री समाज की वेदना मुखरित होती है और इन आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्रियों के तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षणिक स्थिति स्पष्ट होती है । पुरुषों द्वारा लिखित आत्मकथा में स्त्री के चित्रण में शांति होती है किंतु आत्मानुभूति नहीं । यही कारण है की की पुरुषों द्वारा लिखी गई आत्मकथा महिलाओं सवालों को केंद्रीयता प्राप्त नहीं होती । भारतीय समाज और संस्कृति व्यवस्था में महिला जीवन में परिवर्तन मिलता है । शिक्षा एवं संचार माध्यम में क्रांति से स्त्रियों में भी सजाकता आई पहले स्त्री उस पर होने वाले अत्याचार व अन्याय को चुप-चाप सहती रहती थी। किंतु आज वह उनका प्रतिरोध कर रहे हैं । अपने प्रश्नों के उत्तर स्वयं ढूंढ रहे हैं । महिला आत्मकथाओं का विषय केवल उसी आत्मकथाकार की नहीं है, जिसमें आत्मकथा लिखी, अपितु वह महिला समाज की दास्तान होती है, जिसे हर महिला ने भोग है, सहा है । महिला की आत्मकथा अपनी आत्मकथाओं की ऐसी निजी दास्तान है जो हर घर में घटित होती है । महिला को अपने आप भी से पसंद करते समय एक बार पुनः इस पीड़ा वह संघर्ष से गुजरना पड़ता और महिला आत्मकथाओं में यह संघर्ष बहुमुखी मिलता है ।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. हिंदी महिला आत्मकथा रचनाकारों के **साहित्य में सामाजिक संघर्श** का अध्ययन करना ।
2. आत्मकथाओं को अध्ययन का आधार बनाना एवम उसके संदर्भ तथा विषय वस्तु के परिचय पर प्रकाश डालाना।

3. हिंदी महिला आत्मकथाओं में अभिव्यक्त महिला संघर्ष के विविध संदर्भ में उस पर प्रकाश डालाना।

4. महिला आत्मकथाएं के अंतर्गत स्वतंत्र स्त्री भाषा के निर्माण की चुनौती पर प्रकाश डालाना ।

समाज, सामाजिक बोध एवं साहित्य के साथ संलग्नताः-

हिन्दी साहित्य में समाज का यथार्थ चित्रण सर्वप्रथम प्रेमचंद के कथा संसार में देखने को मिलता है। यथा हम कहते है कि- 'साहित्य समाज का दर्पण होता है।' आरंभिक हिन्दी कथाओं में कथा-संसार को रोचक और बोधगम्य बनाने के लिए काल्पनिक पात्रों एवं स्थानो का सहारा लिया जाता था, किन्तु समय परिवर्तन के साथ हिन्दी साहित्य का प्रभाव समाज में देखने को मिलता है। साहित्य तथा समाज दोनों एक दूसरे के पूरक होते है । समाज में जो कुछ भी घटित होता है लेखक उसे साहित्य मैं चित्रित करता है। राहुल सांकृत्यायन के यात्रा वृतान्त से देश-विदेश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। वर्तमान में रचनाकारों ने आत्मकथा में अपने सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। भारतीय समाज में नारियों की स्थिति सदियों से काफी खराब रही है। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य परिवार सम्हालना और बच्चे पालना तक सीमित था। समाज ने महिलाओं पर विभिन्न प्रकार की निर्योग्यताएं, परम्पराएं, रुढ़ियाँ और मन-गढ़ंत विचारधारायें थोप रखी थीं। महिला आत्मकथाकारों ने ऐसी ही रुढ़ परम्पराओं का विरोध अपनी आत्मकथा में किया है । महिला लेखिकाओं ने सामाजिक व्यवस्था द्वारा नारी पर ढ़ाये जाने वाले अत्याचार, विवाह संस्था की असंगतियों, पति द्वारा प्रताड़ना, विधवा जीवन आदि का वर्णन किया है। इसके साथ ही हिंदी साहित्य में अनेको ऐसे लेख, संदर्भ और कहानियाँ, उपन्यास देखने को मिल जायेंगे जिसमें महिलाओं को सामाजिक रुप से काफी निम्न स्तर का वर्णित किया गया है। सती, बाल विवाह, विधवा विवाह निषेध, परित्यक्ता समस्या, उपवास, संपत्ति उत्तराधिकार से वंचित आदि सारी सामाजिक निर्यो ग्यताएँ केवल महिलाओं के ही हिस्से में आई है । हम देखते है कि "स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद प्रजातंत्र के होते हुए भी देश में व्याप्त सामाजिक तथा आर्थिक विषमताएं समाप्त न हो सकी। देश को राजनीतिक स्वतंत्रता तो बहुत बाद में मिली, परंतु हिन्दी का साहित्यकार उससे डेढ़ दो दशक पहले से ही छायावादी युग में अपनी मानसिक मुक्ति की घोषणा कर गया।"हिन्दी साहित्य में दुखिनीबाला की आत्मकथा में सर्वप्रथम सामाजिक मुद्दो को उठाया गया था। जिसके बाद कई सालों तक महिला आत्मकथाओं का साहित्य बाजार सुप्तावस्था में पड़ा रहा।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाः-

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और मानव का स्वभाव भी। परिवर्तन से मानव नये समाज की स्थापना करता है और स्वयं को सभ्य समाज की श्रेणी में लाने का प्रयत्न करता है। भारतीय समाज में अठारहवीं सदी में सामाजिक परिवर्तन के लिए बड़े आंदोलन हुए। भारतीय महिलाओं ने सदैव से

अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को धैर्यपूर्वक सहते रहने का प्रत्यन किया। किन्तु विष्वव्यापी मानवतावादी दृश्टिकोण ने महिलाओं को समाज में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया।हम देखते है कि जिस प्रकार से भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति थी जिसमें परिवर्तन धीमी गति से हुआ है। इसका प्रमुख कारण हमारे समाज में महिलाओं को कमजोर और निम्न स्तर का मानकर उसे घरेलू कार्यों तक सीमित रखा गया। पारिवारिक दायित्व और परिवार के कर्तव्यों का निर्वहन महिलाओं के जीवन का परम धर्म समझा गया। बचपन से महिलाओं को इस प्रकार से शिक्षित किया जाता रहा कि तुम्हारा 'महिला आत्मकथाओं में संघर्ष के आयाम' जीवन घर की चहारदिवारी और पति, परिवार की सेवा तक ही सीमित है। इस प्रकार से महिलाओं को घर की स्वामिनी बनाकर उन्हें घर में ही कैद कर रखा गया।भारतीय समाज में महिलाओं के लिए पारिवारिक तानाबाना इस प्रकार से बुना गया था कि वह घर में छटपटाकर अपना संपूर्ण जीवन काट लेतीं, लेकिन इस कैद से बाहर नहीं निकल पाती।'' मन्नू की तर्कपूर्वक बातें समाज के वाह्य आडम्बरों की परते ं खोलती है। मन्नू का संस्कारी परिवार पढ़ा लिखा और साहित्यिक विधाओं में पारंगत था अतः वे बुद्धि विवेक और तार्किक विषयों पर ज्यादा महत्व देते थे। वे आगे लिखती है - ''आर्य समाजियों वाले हवन-यज्ञ और मन्त्रों च्चार भी कभी नहीं हुए हमारे यहाँ। पिताजी ने उनका समाज-सुधार वाला पक्ष ही अपनाया था। आज से करीब अड़सठ साल पहले बिना घूंघट-पर्दे के की गई बहिन की शादी काफी कांतिकारी कदम था।

विवाह, प्रेम एवं यौन संबधी अवधारणाओं में परिवर्तनः-

विवाह एक धार्मिक संस्था है, हमारे समाज में विवाह की अनिवार्यता है। प्राचीन समय में विवाह का काफी महत्व था जिसके आकार-प्रकार आज भी वेदो में पढ़े जा सकते है। वैसे विवाह का महत्व आज भी कम नहीं हुआ किन्तु इसमें परिवर्तन अवश्य हो गया है। पहले विवाह में परिवार, त्याग, सामंजस्य की भावना मूल होती थी, विवाह से ही वंश की वृद्धि संभव मानीजाती थी। सामाजिक रुप से विवाह में वर-वधू के सुखमय जीवन की कामना की जाती थी। विवाह धार्मिक रीतिरिवाज एवं अनुष्ठान से संपन्न किये जाते थे। ''तैत्ररीय ब्राहमण में विवाह को एक यज्ञ की संज्ञा प्रदान की गई है तथा 'महिला आत्मकथाओं में संघर्ष के आयाम'शतपथ ब्राहमण में पत्नी को अद्र्धांगिनी बताया गया है। बिना पत्नी के पति को पूर्ण पुरुष नहीं माना जाता था। वैदिक धर्म में विवाह एक अटूट बंधन माना जाता था।'' धार्मिक संस्कारों में विवाह एक अटूट बंधन माना जाता है। मनुस्मृति में महिलाओं के लिए आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है जिसमें आर्य विवाह, ब्रहम विवाह, दैव विवाह, प्रजापत्य विवाह श्रेष्ठ विवाह की श्रेणी में आते है । प्राचीन विवाह की प्रचलित रीतियों में आज भी कई रीतियाँ प्रचलन में है। ''विवाह की विभिन्न विधियों में पाणिग्रहण सर्वमान्य व सर्वप्रमुख प्रक्रिया थी। अग्नि परिणयन व विदाई भी चर्चित क्रियाएं थी। शोभायात्रा का भी उल्लेख धर्मशास्त्रों में प्राप्त होता है। नये घर में वधूका स्वागत अत्यंत धूमधाम से किया जाता

था तथा मंगल गायन किया जाता था। विवाह सूत्रों का दाम्पत्य प्रेम और संतान को जन्म देना भी धार्मिक कृत्य स्वीकार किया गया।'' स्पष्ट है कि विवाह मानव जीवन के दाम्पत्य सुख के लिए एक अनिवार्य धार्मिक प्रक्रिया थी। किन्तु बदलते सामाजिक परिवेश में विवाह के समय दहेज प्रथा, बराती स्वागत भोज, आदि ने संस्कारी विवाह में विकृति उत्पन्न कर दी। वधू पक्ष पर अनावश्यक आर्थिक भार पड़ने लगा जिसका परिणाम बाल-विवाह, सती प्रथा, विधवा विवाह निषेध जैसी सामाजिक कुरुतियों का जन्म लेना है। इस प्रकार की कुरीतियों के प्रचलन से महिलाओं की स्थिति खराब हुई तथा विवाह की गौरवशाली परंपरा को भी ठेस लगी। जो किसी न किसी रुप में आज भी प्रचलित है। महिला आत्मकथाकारों ने विवाह से उपजे विभिन्न समस्याओं को अपने आत्मकथा में वर्णित किया है। विवाह अब समस्याओं को ढ़ोने का नाम नहीं है यदि पति या पत्नी को किसी से भीसमस्या है तो वह स्वेच्छा से अथवा कानूनन विवाह-विच्छेद कर सकती है। आज नारी जीवन में विवाह की अनिवार्यता समाप्त हो गई है । अब यह केवल सामाजिक बंधनों और रीति-रिवाजों तक सीमित हो गई है। प्रभा खेतान ने अपनी 'महिला आत्मकथाओं में संघर्ष के आयाम' आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में विवाह का उल्लेख करते हुए लिखा है कि- विवाह एक सामाजिक प्रतिष्ठा है जो उन्हें प्राप्त नहीं हुई। ''मैं प्रभा खेतान मैं कौन हूँ ? क्या मेरी कोई पहचान नहीं है ? सधवा नहीं, क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई है, मैं विधवा नहीं क्योंकि कोई दिवंगत पति नहीं, मैं कोठे पर बैठी हुई रंडी भी नहीं,क्योंकि मैं अपने देह का व्यापार नहीं करती। मैं किसी पर निर्भर नहीं,स्वावलंबी हूँ अपना भरण पोषण खुद करती हूँ।

प्रेम :-

महिला आत्मकथा प्रेम, आश्रय, छल, उत्कंठा और त्याग का प्रतीक है। स्त्री ज्यादातर प्रेम में ही ठग ली जाती है । वह अपना भविश्य नहीं देखती बल्कि वर्तमान को ही सब कुछ मानकर अपना सर्वत्र लुटा देती है । प्रभा खेतान, रमणिका गुप्ता, मन्नू भंडारी तथा अन्य लेखिकाओं की आत्मकथा से यही प्रतीत होता है कि ये प्रेम में आपा खो बैठी जिसका इन्हें जिंदगी भर अफसोस रहा। प्रभा खेतान के जीवन में प्रेम का अर्थ केवल डॉक्टर सर्राफ थे। ''मैं उनके साथ थी मगर किस रुप में? इस रिश्ते को नाम नहीं दे पाउंगी। भला प्रेमिका की भूमिका भी कोई भूमिका हुई ? प्रेम तो सभी करते हैं। प्रेम करने वाली स्त्री, माँ, बहन, पत्नी वह कुछ भी हो सकती है या फिर उसे सीधे-सीधे रखैल कहो ना। रखैल का क्या अर्थ हुआ ? वही जिसे रखा जाता है, जिसका भरण-पोषण करना हो। लेकिन डाक्टर साहब तो मेरा भरण-पोशण नहीं करते, उनसे मैने कभी कोई आर्थिक सहायता नहीं ली। मैं तो खुद कमाती थी, स्वावलंबी थी, एक आत्मनिर्भर संघर्शशी ल महिला थी। हाँ, डाक्टर साहब से प्यार जरुर करती थी। मैंने स्वेच्छा से अपने इस अकेले जीवन का वरण भी किया।''प्रभा खेतान ने अपने जीवन में प्रेम की व्याख्या निस्वार्थ रुप में की है । डाक्टर सर्राफ से उनका लगाव आर्थिक नहीं था बल्कि प्रेम के अभिभूत ही था। वो कहती है कि मैं खुद कमाती हूँ मेरा भरण-पोशण डाक्टर

साहब नहीं करते। प्रभा का प्रेम निश्कपट और निःस्वार्थ था। वो अपनी आत्मकथा में कहती है कि ''माना वह क्षणों की कमजोरी थी, एक भूल थी मगर अपनी इस भूल को अपराध कैसे मान लूँ ? क्या ऐसा कभी घटता नहीं? विवाहित व्यक्ति से एक कुँवारी लड़की कभी प्रेम नहीं करती।'' स्पश्ट है कि 'महिला आत्मकथाओं में संघर्ष के आयाम' प्रभा जी का प्रेम स्वार्थ रहित और सम्मोहक है। आप प्रेम को जबरदस्ती किसी बंधन में बांधने की कोशिश नहीं करती हैं और न ही किसी से छुपाने की।भारतीय हिन्दी साहित्य में प्रेम के विविध रुप देखने को मिलते है। मीरा का प्रेम भक्ति का है तो सूरदास का प्रेम वात्सल्य का है। अर्थात् हमारे जीवन, साहित्य, दर्षन, समाज आदि में प्रेम के अनंत रुप प्रकट होते है । ईश्वर प्रेम अराधना है तो शारीरिक प्रेम वासना। महिला लेखिकाओं ने प्रेम को अराधना और त्याग का विषय नहीं बनाया बल्कि उन्होंने सीधे तौर पर परिवार और समाज से विद्रोह कर दिया है। प्रेम क्षणिक आवेग भी हो सकता है और जीवनभर का अमृत रस भी। प्रेम के संबंध में रमणिका गुप्ता ने अपने जाति, धर्मसे भी विद्रोह कर दिया था। प्रेम उनके लिए उत्कंठा का विशय बन गया था। ''हम लोगों ने लौटकर शादी करने का निर्णय सुनाया। हालांकि मेरा परिचय उनसे राजनीतिक परिस्थिति वश ही हुआ था लेकिन मेरा यह निर्णय मेरे जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी। जाति तोड़कर और वह भी प्रेम विवाह-दोनों ही परिवार की परम्परा और मर्यादा के लिए चुनौती के रुप में देखे जा रहे थे । मामा ने मेरा घर से निकलना बंद कर दिया था। माँ आई। मेरी खूब पिटाई हुई पर मैं कटिबद्ध थी।'' प्रेम अंधा भी होता है वाली बात रमणिका ने चरित्रार्थ कर रखी थी।

सामाजिक रुढ़ियाँः-

भारतीय समाज में महिलाओं को सदैव से दोयम दर्जे का प्राणी मानकर उसको आत्म-विकास करने से रोका गया है। महिलाओं पर विभिन्न प्रकार की सामाजिक रुढियाँ, परंपराओं, कुरुतियाँ और खोखली मान्यताएं लाद दी गई है जिसका कोई 'महिला आत्मकथाओं में संघर्ष के आयाम' वैज्ञानिक आधार नहीं है। महिलायें जात-पांत, छूत-अछूत, अस्पृष्य, शूचिता जैसी सामाजिक निर्योग्यताओं से ग्रसित है। ये सब ऐसी सामाजिक रुढ़ियाँ है जो महिलाओं को स्वतंत्रतापूर्वक जीवन यापन करने में बाधा उत्पन्न करती है । महिलाओं को धार्मिक, रीति-रिवाज, परम्पराएं, उपवास, श्रंगार, सिंदूर आदि रुढ़िवादी परम्परा का निवर्हन करना पड़ता है। इसके आभाव में महिलाओं को समाज में सम्मान मिलना असंभव हो जाता है।आधुनिक महिला आत्मकथाकारों ने ऐसी सामाजिक रुढ़ियों का जमकर विरोध किया है और खुलकर इस विशय में चर्चा की है । प्रभा खेतान मारवाड़ी परिवार से संबंध रखती थी लेकिन व्यापार चमड़े का करती थी जो उनके समाज से बिल्कुल विपरीत कार्य था। ''एक मारवाड़ी लड़की के लिए यह कम साहस की बात नहीं कि वह देश-विदेश यों अकेले घूम ले। पहले

ब्यूटी थेरेपी का कोर्स हालीवुड से किया और अपना ब्यूटीपार्लर खोला था। अब चमड़े का निर्यात करती हूँ।''

भारत की आधी आबादी महिलाएँ हैं किन्तु वे अपने मौलिक अधिकारों से वंचित है । हिन्दी साहित्य और आत्मकथाओं में इस पीड़ा का बार-बार उल्लेख होता है कि संवैधानिक रुप से महिलाओं को कितने ही अधिकार प्राप्त हो , किन्तु वे सामाजिक रुढ़ियों से त्रस्त है । राजेन्द्र यादव ने एक बार इस बात को समझाने का प्रयास किया था कि ''एक लंबी अटूट परंपरा के स्वाभाविक विकास के रुप में आधुनिक काल में लिखित महिलाओं की आत्मकथाओं को भी एक निर्भीक और ईमानदार पहल कहा जा सकता है।

उदाहरण पंजाब और बंगाली भी लिखते है पर हिन्दी साहित्य की आधी आबादी का अंतरंग अभी तक अदृश्य है। हाल के वर्षो में हिंदी लेखिकाओं की कई आत्मकथाएं प्रकाशित हुई हैं। जिनका पाठ एव अनुशी लन हमारे समाज के प्रगति एवं विकास के बड़े-बड़े दावो की धज्जियाँ उड़ाता है। विज्ञान की देन एंव पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण 'महिला आत्मकथाओं में संघर्ष के आयाम' के फलस्वरुप हमारा समाज कितना भी आगे बढ़ गया हो उसकी मानसिकता अभी भी रुढ़ियों एवं परम्पराओं की जंजीरों से जकड़ी हुई है।''

साहित्य समाज का दर्पण होता है। सच दिखाने का साहस एवं अभिव्यक्ति में विविधता साहित्यकार को नये संदर्भ प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करती है। महिला आत्मकथा में सामाजिक रुढ़ियों को दरकिनार कर समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। सामाजिक परम्परा और रुढ़ियों को तोड़ने में रमणिका गुप्ता का विचार साहसिक कदम का आगाज है। रमणिका गुप्ता कहती है कि ''बचपन से ही मैं राजनीतिक और सामाजिक बदलाव की धारणा से जुड़ी रही। पाँचवी-छठी कक्षा में पढ़ती थी तो 'सत्यार्थ प्रकाश' के समर्थन में मूर्ति-पूजा के खिलाफ घंटो बहस करती रहती थी'' रमणिका गुप्ता का मानना है कि मैं समाज के पीछे नहीं भागी और न ही लोक-लाज के डर से रुढ़ियों को ही अपनाया। मैंने अपनी धारणायें, विचार स्वयं तैयार किये बिना किसी भय के। आपका यह साहसिक कदम आपको जीवन में नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध हुआ। ''मैने अपने मापदण्ड खुद गढ़े । औरतों के लिए मेरी अलग मान्यताएं जो संभवतः मेरे समय से बहुत आगे थी, इसलिए समायोजन मे काफी कष्ट हुआ, संघर्ष करना पड़ा। कहते है - ''समरथ को नहीं दोष गुसांई।'' मैंने हमे अपने को समर्थ बनाने का लक्ष्य रखा ताकि अपनी शर्तों पर चल सकूँ।

निष्कर्ष -

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हम जिस समाज मे रहते है उसका ही वरण करते है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों एवं महिलाओं के अधिकारों, कर्तव्यों एवं दायित्वों में काफी अंतर होते है । यहाँ तक कि महिला किस पुरुश से विवाह करेगी, इसका चुनाव करना भी महिलाओं के

अधिकार में नहीं है। महिलाओं पर सामाजिक परंपराएं रुढ़ियाँ, बाल-विवाह, बेमेल विवाह, पर्दा, शुचिता आदि मनगढ़ंत प्रथाएं थोप दी गई । सदियों तक इन अमानवीय रुढ़ियों में जकड़कर महिलायें पुरुषों की मानसिक गुलाम हो चुकी थीं। वो इस जकड़न से मुक्त तो होना चाहती थी लेकिन उसके पास हथियार नहीं थे। धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन हुआ और महिलाओं ने पढ़ना लिखना प्रारंभ किया। पढ़-लिखकर महिलाओं ने यह देखा कि वह तो पुरुशों की सामंतवादी प्रवृत्ति का शिकार है महिला आत्मकथाकारों ने पुरुषों के इस अहं को तोड़ने का प्रयास किया कि वह पुरुषों से कमतर है। महिला आत्मकथा में समाज का संघर्श, पुरुषों की दमनात्मक सोच, महिलाओं पर लादी गई रुढियाँ, यौन संबधी मनोविकार, टूटी-फूटी समाज की वर्जनाओं के विरोध में सशक्त स्वर उभरा है। प्रभा, मैत्रेयी, रमणिका, ममता, मन्नू आदि की आत्मकथा में जीवन संघर्ष के स्पष्ट दर्शन होते हैं।

संदर्भ

1. ढोडरे डा0.संजय हिन्दी की महिला आत्मकथाकार, विधा प्रकाशन कानपुर, प्र.सं.2006, पृ.भमिका से
2. गायकवाड डा.क्रांति स्मकालीन नारी-जीवन और हिन्दी आत्मकथा अन्न पूर्णा प्रकाशन कानपुर प्र.स.2016 पृ.20
3. देवरे प्रो0 शिवाजी हिन्दी आत्मकथा, विद्या प्रकाशन कानपुर, प्र.सं.2016 पृ.27
4. नाईक शंकर डाक्टर बिठठल महिला आत्मकथाओं मै नारी चिंतन विजय प्रकाशन कानपुर, प्रथम. 2017, पृ.34
5. खेतान प्रभा अन्या से अनन्या, राजकमल, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.9
6. भंडारी मन्नू एक कहानी यह भी, राधाकृश्णन, नई दिल्ली, प्र.सं.2007 पृ.17
7. पुष्पा मैत्रेयी कस्तूरी कुण्डली बसे, राजकमल पेपरबेक्स, नई दिल्ली, प्र.सं.2009 पृ.9
8. गुप्ता रमणिका आपहुदरी,सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.स.2015,पृ. 23
9. खुराना डाक्टर के0एल चैहान डाक्टर एस0एस भारतीय इतिहास में महिलाए लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा प्र.सं.2012, पृ.26
10. खेतान प्रभा अन्या से अनन्या, राजकमल, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.12
11. खिल्लारे नामदेव डाक्टर दीपकपद्मा सचदेव कृत 'बूंद बावड़ी', अतुल प्रकाशन कानपुर, प्र.स 2016,
12. खेतान प्रभा अन्या से अनन्या, राजकमल, नई दिल्ली, प्र.स.2010, पृ.9
13. गुप्ता रमणिका हादसे, राधाकृश्णन प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.स.2010,पृ. 16
14. पुष्पा मैत्रेयी कस्तूरी कुण्डली बसे, राजकमल पेपरबेक्स, नई दिल्ली, प्र.सं.2009 पृ.30
16. भंडारी मन्नू एक कहानी यह भी, राधाकृष्णन , नई दिल्ली, प्र.सं.2007 पृ.21
17. गुप्ता रमणिका हादसे, राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.स.2010,पृ. 18

18. गुप्ता रमणिका हादसे, राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.स.2010,पृ. 18
19. पुष्पा मैत्रेयी गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली प्र.स.2008 पृ0 90
20. खिल्लारे नामदेव डाक्टर दीपक पद्मा सचदेव कृत 'बूंद बावड़ी', अतुल प्रकाशन कानपुर, प्र.स.2016,